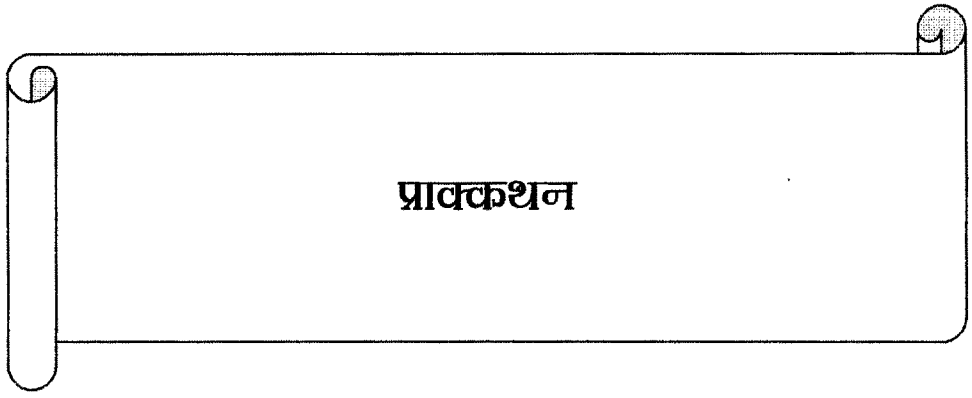

प्राक्कथन

प्राक्कथन

भीष्म साहनी जी एक सशक्त कहानीकार हैं।। उन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं में लेखन किया है। भारत विभाजन के समय हुआ खून-खराबा तथा शरणार्थियों की त्रासदी को उन्होंने देखा था। इसीलिए उनकी बहुत-सी कहानियों में साम्प्रदायिक दंगों का चित्रण आया है। मध्यवर्ग के जीवन को उन्होंने अत्यंत नजदीक से देखा हैं। लेकिन उन्होंने कहीं भी मध्यवर्ग को स्थापित करने का प्रयास नहीं किया है। बल्कि उन्होंने उस वर्ग की कमजोरियों और अंतर्विरोधों को उद्‌घाटित किया है।

मेरे सामने एम्.फिल.उपाधि के लिए लघु शोध-प्रबंध के विषय चयन का प्रश्न उपस्थित होते ही मैंने निश्चय कर लिया कि, मुझे आधुनिक कहानी साहित्य में शोधकार्य करना है। तब मुझे भीष्म साहनी की कहानियों पर शोधकार्य करने की प्रेरणा मिली जब मैंने उनका `प्रतिनिधि कहानियाँ` यह कहानी-संग्रह पढ़ा। उनमें से `चीफ की दावत` इस कहानी ने मुझे बहुत-ही प्रभावित किया। बाद में मैंने उनकी `ओ हरामजादे`, `अमृतसर आ गया है`, `खून का रिश्ता` जैसी कुछ कहानियाँ पढ़ी और मैं उनके कहानी साहित्य की ओर आकर्षित हो गई। लेकिन मुझे इस बात का आश्चर्य भी हुआ कि इतने अच्छे रचनाकार होने के बावजूद किसी शोधकर्ता का ध्यान उनकी कहानियों की तरफ नहीं गया। ऐसी स्थिति में मैंने भीष्म साहनी के कहानियों का अध्ययन करने का निर्णय लिया। जब विभाग के गुरुजनों और मेरे मार्गदर्शक, गुरुवर्य डॉ.इरेश स्वामी जी ने इस विषय के लिए स्वीकृति प्रदान की तो मुझे हार्दिक संतोष हुआ और शोध-कार्य आरंभ किया। इस विषय का अध्ययन करते समय मेरे मन में निम्नलिखित प्रश्न थे...

(1) भीष्म साहनी का वैयक्तिक तथा साहित्यिक जीवन कैसे बीता होगा?

(2) उनकी प्रतिनिधि कहानियों का उद्‌देश्य क्या होगा?

(3) साहनी जी का मध्यवर्गीय लोगों के जीवन के संबंध में क्या विचार हैं?

(4) भीष्म साहनी जी की कहानियों में चित्रित समस्याएँ क्या होगी?

(5) उनका सांस्कृतिक दृष्टिकोण किस तरह का है?

भीष्म साहनी की कहानियों का अध्ययन करते समय मैंने उपर्युक्त सवालों का हल ढूँढने का प्रयास किया है।

प्रस्तुत लघुशोध-प्रबंध के प्रथम अध्याय में भीष्म साहनी के व्यक्तित्व के परिचय के साथ उनके कृतित्त्व की भी संक्षिप्त जानकारी देने का प्रयास किया है। इस अध्याय में उनके जन्म, माता-पिता-भाई, शिक्षा, नौकरी तथा व्यवसाय, विवाह, परिवार , मित्र आदि विविध मुद्दों पर विचार किया गया है। उनके साहित्यिक कृतियों और प्राप्त सम्मानों के बारे में जानकारी दी है।

द्वितीय अध्याय में भीष्म साहनी जी की प्रतिनिधि कहानियों का प्रतिपादय दिया है। उनकी कहानियों में से चुनी हुई महत्त्वपूर्ण 13 कहानियाँ इस कहानी-संग्रह में संकलित हैं।

तृतीय अध्याय के अंतर्गत भीष्म साहनी जी की कहानियों में चित्रित समस्याओं का विवेचन किया है। साहनी जी की कहानियों में चित्रित सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक आदि समस्याओं का मूल्यांकन किया है।

चतुर्थ अध्याय में भीष्म साहनी की कहानियों में मध्य तथा निम्न-मध्यवर्गीयों की मानसिकता के अंतर्गत-दमित इच्छाओं की पूर्ति, हीनता ग्रंथी से ग्रस्त, भीड़ की मनोवृत्ति तथा अंतर्द्वन्द्व को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। आर्थिक अभाव में जीत्ता निम्न-मध्यवर्गीय समाज के अंतर्गत पूँजीवादी व्यवस्था के द्वारा निम्न-मध्यवर्गीयों का शारीरिक और मानसिक शोषण और आर्थिक विवशता तथा बदलते रिश्तों को उद्घाटित करने का प्रयास किया है। मध्यवर्गीयों में बढ़ती प्रदर्शन प्रवृत्ति, निम्न-मध्यवर्ग की संघर्षशीलता और जिजीविषा, निम्न-मध्यवर्गीय युवक-युवती की प्रणय विड़म्बना, रूढियों तथा अंधश्रद्धा में जकड़ा हुआ मध्य-निम्नवर्गीय समाज और नये युग का प्रभाव : सामाजिक यथार्थ को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

पंचम अध्याय में भीष्म साहनी की कहानियों में सांस्कृतिक पक्ष के अंतर्गत धर्म, अहिंसा, ईश्वर, त्याग, भाग्य आदि आध्यात्मिक और नैतिक दृष्टि को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। सामाजिक जीवन के अंतर्गत - पारिवारिक जीवनादर्श में मुण्डन संस्कार, गीत संस्कार, विवाह

संस्कार, मृत्यु संस्कारों तथा अंधविश्वासों का महत्त्व बताया है। स्त्री-पुरुषों के संबंधों का निरूपण तथा आदर्श का स्वरूप बताया है।

उपसंहार के अंतर्गत प्रबंध के विषय का सार दिया है। भीष्म साहनी की कहानियों का अध्ययन करने के पश्चात जो निष्कर्ष हाथ लगे वे उपसंहार में देने का प्रयास किया है।

प्रबंध के अंत में संदर्भग्रंथ सूचीदी है। संदर्भ ग्रंथ सूचीके पूर्वार्ध में भीष्म साहनी की रचनाओं की सूची दी है। साथ ही में प्रत्येक ग्रंथ के प्रकाशक एवं संस्करण दिया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष सहाय्यता करनेवाले तथा समय-समय पर मुझे प्रोत्साहित करनेवाले मेरे श्रद्धेय गुरुजन, हितचिंतकों एवं अत्मिय मित्रों के प्रति कृतज्ञता भाव प्रकट करना मैं अपना आद्य कर्तव्य समझती हूँ।

कृतज्ञता-ज्ञापन

लघु शोध कार्य का संकल्प श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ.इरेश स्वामी जी के कृपापूर्ण मार्गदर्शन का फल है। मैंने आपके विद्वतापूर्ण मार्गदर्शन में यह कार्य पूरा किया है। आपका स्नेह तथा प्रोत्साहन को शब्दों में व्यक्त करने की क्षमता मुझ में नहीं है। आपके सहयोग के बिना यह कार्य कैसे सम्पन्न होता? सातत्यपूर्ण व्यस्तता के बावजूद आप ने इस लघु शोध-प्रबंध का प्रत्येक अध्याय देखा और मुझे निरन्तर प्रोत्साहन एवं प्रेरणा देकर मेरी सहायता की। प्रस्तुत शोध-प्रबंध आप ही के सुयोग्य निर्देशन का परिणाम है। आपके इसी स्नेह, प्रेरणा और आशीर्वाद की मैं निरन्तर अभिलाषी रहूँगी।

आदरणीय डॉ.पी.एस.पाटील जी तथा डॉ.अर्जुन चव्हाण जी का आशीर्वाद और प्रेम मेरे साथ रहा है, उनके प्रति मैं सविनय आभार प्रकट करती हूँ।

उमा महाविद्यालय, पंढरपुर के प्राचार्य डॉ.एस.के.कुलकर्णी तथा प्रा.डी.एस.परिचारक, मेरे सभी सहयोगी प्राध्यापक, संस्था के पदाधिकारी एवं कर्मचारियों के प्रत्यक्ष एवं परोक्ष सहयोग से यह कार्य सम्पन्न हो पाया है। अत: इन सबके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ।

मित्रवर कु.चित्रा पणशीकर, विजया पाटील, शामला कोळेकर, विजया कांबळे और श्री.अरूण गंभीरे और श्री.कुचेकर ने मुझे दिनों-दिन अपने कार्य में बने रहने के लिए स्नेह एवं सद्भावपूर्ण सुझाव देकर अपनी मित्रता की प्रामाणिकता सिद्ध कर दी है। उनके प्रति मैं कृतज्ञत ज्ञापित करती हूँ।

इस अवसर पर मैं आदरणीय माता तथा भाई को कैसे भूल सकती हूँ? पिता का छत्र सिर से उठते ही मेरे भाई श्री.आनंद ने पिता की जगह लेकर किसी भी चीज की कमी महसूस नहीं होने दी। उनके स्नेह तथा आशीर्वाद के बिना यह कार्य कैसे हो सकता था?

परिवार के अन्य सदस्य प्रा.भरत खिलारे, प्रा.प्रकाश खिलारे, विनय, जय, दत्ता, संजय और कु. बेबी तथा अन्य सभी सदस्यों के प्रति आभार प्रदर्शन मात्र औपचारिकता होगी, अस्तु! उनसे शाश्वत प्रेरणा, ममता एवं शुभाकांक्षा की ही मंगल कामना करती हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय के सभी कर्मचारियों की आभारी हूँ।

अन्त में इस शोध-प्रबंध को अतिशीघ्र एवं सुचारू रूप से टंकलिखित रूप देने का काम श्रीयुत मिलिंद भोसले जी ने किया, उनके प्रति भी आभार प्रकट करती हूँ।

इसके साथ ही मैं अपना यह लघु शोध-प्रबंध अत्यंत विनम्रता के साथ अवलोकन के लिए आपके सम्मुख रखती हूँ।

आपकी कृपापर्थी

(कु.खिलारे सिंधू)
शोध-छात्रा